डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(नेशनल अकादमी ऑफ़ लेटर्स)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्य अकादेमी का आयोजन

अखिल भारतीय युवा संताली लेखक उत्सव संपन्न

कविता–कहानी पाठ के अलावा लेखन के कारणों पर विचार–विमर्श

नई दिल्ली, 31 जुलाई 2018 : साहित्य अकादेमी द्वारा अकादेमी सभागार, नई दिल्ली में अखिल भारतीय युवा संताली लेखक उत्सव संपन्न हुआ, जिसमें भाग लेने के लिए असम, बिहार, झारखंड, ओड़िशा, पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश, गुजरात और दिल्ली के लगभग चालीस युवा लेखक पधारे थे। समारोह में बड़ी संख्या में संताली–भाषी श्रोताओं के साथ–साथ अन्य भाषाओं के साहित्यप्रेमी भी उपस्थित थे।

उत्सव के अंतिम दिन आयोजित समारोह का चतुर्थ सत्र 'मैं क्यों लिखता/लिखती हूँ?' विषय पर केंद्रित था। सत्र की अध्यक्षता डॉ. जितेंद्रनाथ मुर्म ने की। इस सत्र में श्रीमती मायनो टुडु श्रीमती सुचित्रा हांसदा, श्री श्यामचंद्र टुडु और श्री मिंटु हेंब्रम ने साहित्य लेखन की अपनी प्रेरणाओं और कारणों पर प्रकाश डाला। श्रीमती मायनो टुडु ने कहा कि अपनी सामाजिक परंपराओं और संस्कृति के दुरुपयोग और उपेक्षा ने उन्हें लिखने की ओर प्रवृत्त किया। श्रीमती सुचित्रा हांसदा ने कहा कि जनजीवन की स्मृतियों को सँजोना और समाज को सकारात्मक दिशा प्रदान करना उनके लेखन का मुख्य उद्देश्य है। श्री श्यामचंद्र टुडु ने कहा कि साहित्य–सर्जना के छह उद्देश्य हैं : यश, धन, आचरण, स्व–कल्याण, अलौकिक आनंद और सु–उपदेश। उन्होंने बताया कि वे जीविकोपार्जन के लिए लेखन की दुनिया में आए, लेकिन समाज का सर्वांगीण उत्थान अब उनके लेखन का मुख्य उद्देश्य बन गया है। श्री मिंटु हेंब्रम ने कहा कि लेखन के माध्यम से हम अपने समय का चित्रण करते हैं और इससे भविष्य की पीढ़ी यह जान पाती है कि हमारा समय कैसा था। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ. जितेंद्रनाथ मुर्मु ने चारों युवा लेखकों को उनके प्रेरणास्पद आलेख के लिए बधाई दी, तथा सर्जनात्मकता को निखारने के लिए अध्ययन एवं अभ्यास की तकनीक को अपनाने का सुझाव दिया।

श्री परिमल हांसदा की अध्यक्षता में आयोजित समारोह का पंचम सत्र कविता–पाठ का था, जिसमें सुश्री होलिका मरांडी तथा सर्वश्री सुराई हांसदा, अनिल माझी, गोपाल हांसदा, सुतलाल सोरेन, हजाम बास्के एवं बालेश्वर हांसदा ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

क्रमशः...पृष्ठ : 2

भोजनोपरांत षष्ठ सत्र कहानी–पाठ का था, जिसकी अध्यक्षता श्री पूर्णचंद्र हेंब्रम ने की। इस सत्र में सर्वश्री जयसागर मुर्मु एवं लक्ष्मण किस्कु ने क्रमशः 'करीम चाचा आर उनिया साइकिल' (करीम चाचा और उनकी साइकिल) एवं 'जलन खाँचार' (ईर्ष्या का पिंजरा) शीर्षक कहानियाँ सुनाईं, जबकि श्री सुंदर मोहन हेंब्रम ने 'हीरावती' (पारिवारिक प्रकाश) एवं 'काहेद' (लीला) शीर्षक कहानियों का पाठ किया। इन कहानियों में संताल परिवारों के दैनंदिन जीवन को अभिव्यक्ति दी गई थी।

समारोह के अंतिम सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता वरिष्ठ कवि श्री भुजंग टुडु ने की, जो कविता–पाठ का था। इस सत्र में सर्वश्री सतीलाल मुर्मु, गणेश मरांडी, विजय मुर्मु, मिथुन टुडु, काशुनाथ सोरेन तथा सुश्री सोनाली हांसदा एवं श्रीमती चिन्मयी हांसदा ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

दोनों सत्रों में पढ़ी गई कविताएँ विविध भावों और विषयों पर केंद्रित थीं। युवा कवियों ने प्रेम, प्रकृति, संताली जनजीवन, सांस्कृतिक संरक्षण, सामाजिक स्थितियों के प्रति चेतना, देशभक्ति तथा युवाओं को प्रोत्साहन आदि को लेकर अपनी कविताएँ सुनाईं, जिन्हें श्रोताओं ने बहुत पसंद किया। अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने सत्रों का संयोजन किया तथा समारोह के दौरान असम के पूर्व राज्यमंत्री एवं संताली साहित्यकार श्री पृथिवी माझी तथा मयूरभंज लोकसभा क्षेत्र के सांसद श्री रामचंद्र हांसदा की दीर्घकालीन उपस्थिति के लिए उन्हें साधुवाद दिया।

समारोह के अंत में अकादेमी के संताली भाषा परामर्श मंडल श्री मदन मोहन सोरेन के औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ समारोह संपन्न हुआ। उन्होंने युवाओं से अपील की कि वे विभिन्न सहवर्ती भाषाओं में आधुनिक शैली–शिल्प की रचनाओं के अध्ययन के माध्यम से अपने लेखन के शैली–शिल्प को प्रखर और अद्यतन करने पर विशेष ध्यान दें, तभी संताली साहित्य अन्य भाषाओं की तुलना में समृद्ध हो पाएगा।

डॉ. के. श्रीनिवासराव